

॥ श्रीरघुनाथाष्टकम् ॥

.. shrIraghunAthAShTakam ..

sanskritdocuments.org

July 26, 2016

---

# Document Information

---

Text title : raghunAthAShTakam

File name : raghunaatha8.itx

Category : aShTaka

Location : doc\_raama

Author : Traditional

Language : Sanskrit

Subject : philosophy/hinduism/religion

Transliterated by : WebD

Proofread by : Ravin Bhalekar ravibhalekar at hotmail.com

Latest update : January 07, 2005

Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

Site access : <http://sanskritdocuments.org>

॥ श्रीरघुनाथाष्टकम् ॥

श्री गणेशाय नमः ।

शुनासीराधीशैरवनितलङ्गिणीडितगुणं  
प्रकृत्याऽजं जातं तपनकुलचण्डांशुमपरम् ।  
सिते वृद्धिं ताराधिपतिमिव यन्तं निजगृहे  
ससीतं सानन्दं प्रणत रघुनाथं सुरनुतम् ॥ १ ॥

निहन्तारं शैवं धनुरिव इवेक्षुं नृपगणे  
पथि ज्याकृष्टेन प्रबलभृगुवर्यस्य शमनम् ।  
विहारं गार्हस्थ्यं तदनु भजमानं सुविमलं  
ससीतं सानन्दं प्रणत रघुनाथं सुरनुतम् ॥ २ ॥

गुरोराज्ञां नीत्वा वनमनुगतं दारसहितं  
ससौमित्रिं त्यक्त्वेप्सितमपि सुराणां नृपसुखम् ।  
विरुपाद्राक्षस्याः प्रियविरहसन्तापमनसं  
ससीतं सानन्दं प्रणत रघुनाथं सुरनुतम् ॥ ३ ॥

विराधं स्वर्नीत्वा तदनु च कबन्धं सुररिपुं  
गतं पम्पातीरे पवनसुतसम्मेलनसुखम् ।  
गतं किष्किन्ध्यायां विदितगुणसुग्रीवसचिवं  
ससीतं सानन्दं प्रणत रघुनाथं सुरनुतम् ॥ ४ ॥

प्रियाप्रेक्षोत्कण्ठं जलनिधिगतं वानरयुतं  
जले सेतुं बद्धाऽसुरकुल निहन्तारमनघम् ।  
विशुद्धामर्धाङ्गीं हुतभुजि समीक्षन्तमचलं  
ससीतं सानन्दं प्रणत रघुनाथं सुरनुतम् ॥ ५ ॥

विमानं चारुह्याऽनुजजनकजासेवितपद  
मयोध्यायां गत्वा नृपपदमवाप्तारमजरम् ।  
सुयज्ञैस्तृप्तारं निजमुखसुरान् शान्तमनसं  
ससीतं सानन्दं प्रणत रघुनाथं सुरनुतम् ॥ ६ ॥

प्रजां संस्थातारं विहितनिजधर्मं श्रुतिपथं  
सदाचारं वेदोदितमपि च कर्तारमखिलम् ।  
नृषु प्रेमोद्रेकं निखिलमनुजानां हितकरं  
ससीतं सानन्दं प्रणत रघुनाथं सुरनुतम् ॥ ७ ॥

तमः कीर्त्याशेषाः श्रवणगदनाभ्यां द्विजमुखास्तरिष्यन्ति  
ज्ञात्वा जगति खलु गन्तारमजनम् ॥

अतस्तां संस्थाप्य स्वपुरमनुनेतारमखिलं  
ससीतं सानन्दं प्रणत रघुनाथं सुरनुतम् ॥ ८॥

रघुनाथाष्टकं हृद्यं रघुनाथेन निर्मितम् ।  
पठतां पापराशिघ्नं भुक्तिमुक्तिप्रदायकम् ॥ ९॥

॥ इति पण्डित श्रीशिवदत्तमिश्रशास्त्रि विरचितं श्रीरघुनाथाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

Proofread by Ravin Bhalekar ravibhalekar@hotmail.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted for promotion of any website or individuals or for commercial purpose without permission.

---

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

---

.. shrIraghunAthAShTakam ..  
was typeset on July 26, 2016

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

